अंक - 33 | जनवरी - जून 2016

अजामुख

भा.कृ.अ.प.-केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान
ICAR-Central Institute for Research on Goats
(An ISO 9001:2008 Certified Organization)

सम्पादक मंडल

मुख्य सम्पादक:
डा. भुवनेश्वर राय

सम्पादक :
डा. गोपाल दास
डा. अनु राहल
डा. नितिका शर्मा
डा. विजय कुमार
डा. हरिऔध तिवारी

टंकक
जगदीश चन्द्र

निदेशक, भा.कृ.अ.प.-केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम, फरह, मथुरा (उ.प्र.) भारत द्वारा प्रकाशित
http://www.cirg.res.in

निदेशक की कलम से

प्यारे किसान भाईयों मैं विशेषकर बकरी पालन से जुड़े हुए किसान भाईयों एवं उद्यमियों को अपनी ओर से बधाई देना चाहता हूँ, जिन्होंने बकरी पालन को न केवल अपनी आजीविका का साधन बनाया है वरन इसे एक व्यवसाय के रूप में परिवर्तित करने की दिशा में अच्छा कार्य किया है। भारत में पशुपालन को खेती का उत्तम विकल्प माना गया है, इसमें बकरी पालन का अपना विशेष योगदान है। विशेषकर विपरीत जलवायु परिस्थितियों (सूखा इत्यादि) में बकरी पालन से किसान की आर्थिक स्थिति स्थिर बनी रहती है। बकरियाँ चराई के माध्यम से अपने शरीर का पोषण करके उत्तम किस्म के दूध एवं माँस का उत्पादन करती है। आजकल बकरी पालन का व्यवसायिक स्वरूप विकसित हो रहा है जिसके फलस्वरूप पूरे देश में अच्छी नस्लों पर आधारित बकरी फार्म खोले जा रहे हैं जिसका उद्यमियों को अच्छा लाभ मिल रहा है। मेरे विचार से हर जलवायु क्षेत्र में पाई जाने वाली नस्ल ही वहाँ के परिप्रेक्ष्य में उत्तम उत्पादन देने में सक्षम होती है क्योंकि जलवायु विशेष में पाई जाने वाली नस्लें जलवायु के प्रतिकूलन होने पर भी अनुकूलन की क्षमता रखती हैं जिससे कि उनके उत्पादन पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता । देश के लाखों लघु व सीमांत किसान एवं भूमिहीन मजदूर बकरी पालन कर रहे हैं । हमारे देश में बकरियों की संख्या लगभग 13.5 करोड़ है जोकि विश्व में सर्वाधिक है । बकरी पालन का हमारे देश में लगभग 7 करोड़ बकरी पालकों/उद्यमियों की आजीविका चलाने तथा खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान है । बकरी पालन का देश की कुल पशुधन जी डी पी में लगभग 8.4 प्रतिशत योगदान हैजो मुख्यत: बकरी मांस, दुग्ध, खाल, रेशा व खाद के रूप में प्राप्त होता है । इसके अतिरिक्त बकरी पालन के द्वारा करीब 4.2 प्रतिशत की दर से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार का सृजन भी किया जाता है हम सबको देश के सुदूर उत्तरी क्षेत्र से पूर्वी भारत तक तथा सम्पूर्ण देश की बकरियों के लिए अच्छी योजनाऐं बनाने हेतु संकल्पित होने चाहिए जिससे कि बकरियों का विकास संभव हो सके।

मैं संस्थान के सभी वैज्ञानिकों को उनके द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यों की सराहना करता हूँ । संस्थान को आदरणीय डा. एच. रहमान, उपमहानिदेशक (पशु विज्ञान) द्वारा समय-समय पर मार्गदर्शन प्राप्त होता रहता है। इसके साथ ही माननीय महानिदेशक, भा.कृ.अ.प. एवं सचिव डेयर डा. टी. महापात्र द्वारा संस्थान के वैज्ञानिकों को प्रोत्साहन एवं अनुसंधान में बेहतर सहभागिता हेतु सद्प्रेरणा प्राप्त होती रही है। आप महानुभावों के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ।

आशा करता हूँ कि बकरीपालन पर प्रकाशित यह मुखपत्र बकरी पालकों, उद्यमियों एवं पशु प्रसार में संलग्न कार्यकर्ताओं के लिए उपयोगी सिद्द होगा।

(एम. एस. चौहान)
निदेशक

बकरी पालन द्वारा महिला सशक्तिकरण

बृजमोहन, अनुपम कृष्ण दीक्षित, खुश्याल सिंह, विजय कुमार एवं एस.सी.एल. गौतम

हमारे देश में अधिकतर महिलायें घर गृहस्थी के दैनिक कार्यों तक ही सीमित रही हैं, धनार्जन का कार्य पुरूष की जिम्मेदारी रही है, इस कारण महिलाओं का सामाजिक स्तर निम्न कोटि का रहा है। सामाजिक उन्नति के लिए महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक तथा बौद्धिक रूप से सशक्त होना अति आवश्यक है। प्राय: आर्थिक रुप से कमजोर महिलाओं का तुलनात्मक रुप से बौद्धिक स्तर अच्छा नहीं होता क्योंकि गरीबी तथा कुछ अन्य कारणों से गरीब लोगों में लड़कियों की शिक्षा सहीं ढंग से नहीं हो पाती है। अत: इन गरीब महिलाओं को बकरी पालन से आत्मनिर्भर बनाकर महिला सशक्तीकरण के एक अवयव की पूर्ति की जा सकती है।

बकरी पालन एक ऐसा व्यवसाय है जो बहुत कम पूंजी में घर गृहस्थी का कार्य करते हुए आसानी से किया जा सकता है। अनपढ़ महिला तक इस व्यवसाय को बखूबी कर सकती हैं तथा अतिरिक्त आय कर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो सकती हैं। बकरी पालन के लिए कम पूँजी के साथ किसी विशेष अतिरिक्त स्थान अथवा चारे विशेष की आवश्यकता नहीं होती है। घर पर ही 10–20 बकरियों को पाला जा सकता है तथा सार्वजनिक स्थलों पर चराकर व पेड़ों की पत्तियां, घास आदि से तथा घर में अवशेष भूसी रोटियां आदि खिलाकर आसानी से पाला जा सकता है, उक्त व्यवसाय गृहस्थी के दैनिक कार्यों के साथ–साथ आसानी से शेष समय में किया जा सकता है इसके लिए पुरूष के सहयोग की भी आवश्यकता न के बराबर होती है। अत: महिला अपने स्वंय के बल पर उक्त व्यवसाय को कर सकती हैं तथा अतिरिक्त आय का श्रोत बना सकती हैं। यह आय महिला की अपनी आय होती है जो उसे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाती है । आर्थिक आत्मनिर्भरता महिलाओं के सशक्तीकरण का एक आवश्यक पहलू है । अत: बकरी पालन महिला सशक्तीकरण में सहायक है इसे अपना कर हर वर्ग की महिलायें अपनी अतिरिक्त आय कर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो सकती हैं। कमजोर वर्ग की असहाय महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में बकरी पालन वरदान सिद्ध हो सकता है। अत: बकरी पालन व्यवसाय महिला सशक्तीकरण का एक सशक्त माध्यम है। इसके द्वारा महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है जो महिला सशक्तीकरण की ओर एक आवश्यक कदम है।

स्वच्छ प्रबंधन स्वस्थ बकरी

शिवचरण लाल गौतम

बकरी पालन कर यदि चाहो धन का अच्छा अर्जन। तो बकरी को रखो स्वच्छ और कीजे स्वस्थ प्रबंधन।।
प्रति बकरी प्रतिदिन किलो देऊ दलहनी भूसा। बाड़ा हर हालत में रहना चाहिए इसका सूखा।।
नमी अगर बाड़े रहे बकरी हो बीमार। स्वस्थ बकरियों से अलग कर, कर उसका उपचार ।।
चूना नाद पुताय, पिलाओ निर्मल पानी। दाना नित प्रति देउ, स्वस्थ रहे बकरी रानी।।
दो प्रतिशत मिनरल मिक्चर, दाना डलवाओ। सादा नमक एक प्रतिशत उसमें मिलवाओ।।
बकरा, बकरी, मेमना अलग–अलग आवास। दूध पीलाने के समय केवल लाओ पास।।
इनब्रीडिंग होवे नहीं रखना इसका ध्यान। संतति इससे बिगड़ती आनुवांशिकी प्रमाण।।
गर्मी में आवे अजा तो करना ये काज। ग्याभिन उसे कराइये दस बारह घंटे बाद।।
नम्बर सब पर डालिये बनी रहे पहचान। सभी रजिस्टर फार्म के पूर्ण रहे ये जान।।
संक्रामक जो ब्याधियां टी.के. दो लगवाय। अन्तपरजीवी दवा दो–दो बार पिलाय।।
कीमत बकरी दूध की जो अच्छी ना मिल पाय। बना पनीर बेचो उसे, बढ़ जायेगी आय।।
अच्छी कीमत चाहते तो करना ये काम। ईद, दिवाली आदि पर मिलते अच्छे दाम।।

गुजरात राज्य की बकरी संपदा एवं विकास संस्तुतियाँ

मनोज कुमार सिंह, महेश शिवानंद डिगे, नितिका शर्मा एवं अनुपम कृष्ण दीक्षित

गुजरात प्रांत, राष्ट्र का पशु विविधता में सर्वाधिक संपन्न राज्य है। यहाँ पर बकरियों की पॉच नस्लें –कच्छी, जालावादी, गोहिलावादी, मेहसाना एवं सुरती पायी जाती हैं। बकरी एवं भेड़ पालन रेवाड़ी, भरवाड़ देवीपूजक आदि समुदाय के लोगों का पारंपरिक एवं प्राथमिक आजीविका का साधन हैं। जिनकी संख्या राज्य की कुल जनसंख्या का लगभग 15 प्रतिशत है।

कच्छी

कच्छी द्विकाजी (मांस एवं दूध) नस्ल की बकरी है। इसका मूल क्षेत्र गुजरात राज्य का कच्छ जिला है परन्तु यह बनांसकाठा, पाटन व मेहसाना जिलों में भी पाई जाती है। यह नस्ल कच्छ क्षेत्र के विषम वातावरण में पूर्ण रूप से अनुकूलित हो चुकी है। कच्छी बकरी मध्यम आकार, शरीर काले रंग का एव गर्दन पर सफेद धब्बे होते हैं। छोटे–छोटे सफेद रंग के धब्बे कानों पर भी पाये जाते हैं। कान मध्यम लम्बाई के नीचे झुके हुए एवं पत्तीनुमा आकार के होते हैं। शरीर पर मध्यम लम्बाई (6–9 से.मी.) के बाल पाये जाते हैं। सींग मध्यम (15 से.मी.) से बड़े (22 से.मी.), पीछे को मुड़े एवं ऐंठन लिये एवं बादामी रंग के होते हैं। नाक मध्य में ऊपर की ओर ऊभरी होती है। नरों में नाक पर प्राय: बड़े –बड़े बाल भी पाये जाते हैं। दाढ़ी एवं वेटल्स नर एवं मादा दोनों में नहीं पाये जाते हैं।

गोहिलावादी

गोहिलावादी बकरियों का उद्गम गुजरात के काठियावाड़ क्षेत्र स्थित भावनगर जिले (गोहिलावाड़) में हुआ है। ये बकरियाँ अपने शुद्ध रूप में मुख्यतया भावनगर एवं अमरेली जिलों में पायी जाती हैं परन्तु कुछ रेबड़ उपरोक्त जिलों से सटे अहमदाबाद, जूनागढ़ एवं राजकोट के सीमावर्ती क्षेत्र में भी पाए जात है। यह मध्यम आकार की दुकाजी नस्ल है। शरीर पूरी तरह काला होता है। नाक तोतेनुमा (बीच में उभरी हुई), होती है तथा नर एवं मादा दोनों में वेटल्स पाये जाते हैं। सींग मोटे, 1–3 घुमाव लिये एवं पीछे की ओर मुड़े होते हैं। कान मध्यम लम्बाई के (15–20 से.मी.), पत्तीनुमा, नीचे की ओर लटके होते हैं। इन बकरियों का अयन समान रूप

से विकसित तथा थन लम्बे, कीपनुमा एवं शंकु के आकार के होते हैं।

जालावादी

जालावादी बकरियों का मूल क्षेत्र सुरेन्द्रनगर जिला है जिसे जालावाड़ के नाम से भी जाना जाता था। ये बकरियाँ राजकोट जिले में भी पाई जाती हैं। ये बड़े आकार की काले रंग की बकरियाँ हैं। कान बड़े एवं नीचे लटके हुए होते हैं। कान पर सफेद काले धब्बे या काले रंग के कानों पर सफेद धब्बे होते हैं जो कि आकाश में तारों के समान प्रतीत होते हैं, इस कारण इन्हें तारा बकरी भी कहा जाता है। इनके सींग लम्बे, मजबूत, स्क्रूदार पेंच की तरह घुमाव लिए (2–5 घुमाव) एवं ऊपर की ओर उठे हुए, गर्दन लम्बी, नाक बीच में उभरी हुई, थोड़ी उठी हुई, पूरे शरीर पर छोटे–छोटे बाल (1 से 1.5 इंच) परन्तु जांघों पर बड़े बाल (2–3 इंच), अयन बड़े एवं शंकु आकार के होते हैं।

मेहसाना

मेहसाना उत्तरी गुजरात की प्रमुख दुकाजी नस्ल है, इसका उद्गम क्षेत्र मेहसाना जिला है। इस नस्ल की बकरियाँ मुख्यतया मेहसाना, बनासकाठा एवं पाटन जिलों में पाली जाती हैं। ये बकरियाँ मेहसाना जिले से सटे अहमदाबाद, गॉधीनगर, साबरकाठा एवं कच्छ जिले के सीमावर्ती क्षेत्र में भी पायी जाती हैं। ये बकरियाँ मध्यम आकार की काले रंग की होती हैं।

कान, चौड़े, पत्तीनुमा नीचे की ओर लटके हुये काले रंग के होते हैं जिन पर सफेद धब्बे (छोटे व बड़े) होते हैं। नाक सपाट (सीधी) होती है। सींग हल्का घुमाव लिये, ऊपर की ओर उठे एवं पीछे की ओर मुड़े हुए एवं मध्यम लम्बाई (12–18 से.मी.) के होते हैं।

सुरती

इस नस्ल की बकरियाँ प्रमुखतया वलसाड़, सूरत एवं बड़ौदा जिलों में पायी जाती हैं। गुजरात राज्य की अन्य बकरियों की नस्लों के विपरीत यह मध्यम आकार की सफेद रंग की प्रमुख दुकाजी नस्ल है जिसे अधिक दूध उत्पादन के लिये मुख्यतया जाना जाता है। अधिकांशत: ग्रामीण बकरी पालक सुरती बकरियों को दूध के लिये छोटे-छोटे रेबड़ (2-6) में घर या घर के आसपास चराकार पालते हैं। सींग लगभग 50 प्रतिशत जानवरों में ही पाये जाते हैं जो मध्यम लम्बाई (14–18 से.मी.) के पीछे की ओर मुड़े होते हैं। कान मध्यम लम्बाई (14–18 से.मी.) के पत्तीनुमा नीचे की ओर लटके होते हैं। गुजरात के अधिकांश बकरी पालक (>95%)

बकरियों को चराई पद्धति पर पालते हैं । गाँवों के बाहर कटीली झाड़ियों से बाड़े की दीवार बनाकर बकरियों को खुले में रखा जाता है । सभी आयु के पर व मादा पशु एक साथ रखे जाते हैं ।

बकरियों में अधिक उत्पादन के लिए संतुतियाँ:

1. बकरी पालन की घुमंन्तू चराई पद्धति (रेंज ग्रेजिंग) से पूरक आहार व्यवस्था (स्टेट्रिजिक सप्लीमेंन्ट्री फीडिंग) को अपनाऐ। जिस अवधि में खेतों या गौचर में वनस्पति कम उपलब्ध रहती है उस दौरान बढ़ते बच्चों (3 से 9 माह वाले) को अतिरिक्त पूरक आहार (150–250 ग्राम) प्रतिदिन दाना अवश्य खिलायें। दूध देने वाली एवं गर्भवती बकरी (आखिर के 2 से 3 माह) को 200 से 350 ग्राम प्रतिदिन दाना अवश्य दें।
2. अन्त:प्रजनन (इनब्रिडिंग) के दोषों से बचने के लिए बकरों का चुनाव 3–6 माह की उम्र में दूसरे बकरी पालक के रेबड़ से करें। बकरों को दो वर्ष उपयोग करने के बाद दूसरे रेबड़ के बकरे से बदल लें। प्रथमवार बकरियों को गर्भित कराते समय उनका शरीर भार कम से कम 16 किलो एवं उम्र 12 माह हो। प्रजनन क्षमता (दो ब्यातों के बीच अन्तराल एवं जुड़वा बच्चे पैदा करने की दर) अच्छी हो । बकरियों को अक्टूबर–नवम्बर एवं मई–जून में ही ग्याभिन करायें जिससे बच्चों में बढ़वार अधिक एवं मृत्युदर कम से कम हो ।
3. प्रतिकूल मौसम के लिए कम से कम एक कमरा अवश्य बनायें जिससे बकरियों को ठंड एवं बरसात से बचाया जा सके।
4. नवजात बच्चों को पैदा होने के आधे घन्टे के अन्दर खीस पिलायें। बीमार बकरियों एवं मेमनों को अलग रखने की व्यवस्था करें जिससे संक्रमण रोका जा सके। वर्षा ऋतु से पहले एवं बाद में कृमि नाशक दवा पिलायें। रोग निरोधक टीके (मुख्यत: पी.पी.आर., ई.टी., एफ.एम.डी.) समय से अवश्य लगवायें। पशु गृह पर्याप्त मात्रा में धूप, हवा एवं खुली जगह में हो। पशुगृह को साफ एवं स्वच्छ रखें। यदि बकरी पालक उपरोक्त संस्तुतियों को अपनाते हैं तो बकरियों की उत्पादकता 40–50 प्रतिशत बढ़ जायेगी ।

गुजरात की बकरियों के प्रमुख उत्पादन एवं जनन संबन्धित अभिलक्षण

लक्षण एवं उत्पादन	कच्छी	जालावादी	गोहिलावादी	मेहसाना	सुरती
प्रथम ब्यांत की उम्र (माह)	(16–24)	(18–24)	(18–24)	(18–24)	(16–22)
दो ब्यांतों का अंतराल (माह)	10–11	10–11	10–11	10–11	8–10
दो या अधिक बच्चे देने की क्षमता (%)	30–40	50–65	50–55	40–45	50–65
दुग्ध उत्पादन/दिन (लीटर)	(0.6–1.2)	(08–2.0)	(0.8–2.0)	(0.8–1.5)	(1.0–3.0)
वजन (कि.ग्रा.) **व्यस्क नर**	40–50	45–50	45–60	40–50	35–45
वजन (कि.ग्रा.) **व्यस्क मादा**	30–40	30–45	30–45	30–45	35–35
कुल दुग्ध उत्पादन (लीटर)/ब्यांत	100–140	120–180	120–165	110–155	120–250

भेड़-बकरी में छँटनी का महत्व

गोपाल दास, नितिका शर्मा एवं साकेत भूषण

प्रत्येक प्रजाति या नस्ल के जानवरों में प्रत्येक आनुवांशिक गुण में भिन्नता पायी जाती है। यह विभिन्नता शारीरिक बनावट, उत्पादन या फिर जनन गुणों में होती है। उदाहरण के लिये किसी भेड़ या बकरी नस्ल में छः माह के शारीरिक भार में आनुवांशिक विभिन्नता होती है। अतः एक सफल पशु पालक के लिये आवश्यक है कि रेवड़ में वही जानवर रखें जो सामान्य या सामान्य से अधिक आकार, उत्पादन व जनन गुण वाले हों ताकि उसे पशु पालन से अधिक लाभ प्राप्त हो सके। भेड़-बकरी पालने में चयन तथा निष्कासन एक दूसरे के परिपूरक हैं क्योंकि यह दोनों क्रियाऐं साथ-साथ चलती हैं। जब रेवड़ में कुछ जानवरों का चयन किया जाता है तो कुछ जानवरों का निष्कासन स्वतः ही हो जाता है।

भेड़-बकरी पालन में निष्कासन या छँटनी एक महत्वपूर्ण क्रिया है जिसके द्वारा रेवड़ से अनुपयोगी या कम उपयोगी जानवरों की पहचान कर रेवड़ से निष्कासित कर मांस के लिए बेच देते हैं । यह इसलिये करते हैं कि अनुपयोगी जानवर पर खर्च तो उपयोगी जानवर के बराबर करना पड़ता है लेकिन उत्पादन काफी कम मात्रा में प्राप्त होता है जिससे रेवड़ का समग्र उत्पादन प्रभावित होता है। अतः भेड़-बकरी पालक को प्रत्येक जानवर पर नजर रखनी चाहिये और समय-समय पर अनुपयोगी जानवरों की छँटनी कर रेवड़ से निष्कासन करके अन्य उपयोगी जानवर को शामिल करते रहना चाहिये। रेवड़ में अनुपयोगी जानवरों की छँटनी करने के निम्न वर्णित आधार हैं।

नस्ल के पहचान चिन्हों के आधार पर छँटनी: प्रत्येक भेड़ या बकरी नस्ल के अलग अलग पहचान चिन्ह होते हैं, यह मुँह की बनावट, कानों व पूँछ की लम्बाई, शरीर का रंग, उत्पादन व जनन स्तर आदि हो सकते हैं। सामान्यतः रेवड़ से तीन माह तक मेमने की कोई छँटनी नहीं की जाती है लेकिन जैसे ही मेमना तीन माह के हो जायें तो उनमें से जो मेमने पहचान चिन्हों के अनुसार नस्ल के अनुरूप न हों तो उन्हें रेवड़ से निष्काषित कर देना चाहिये।

शारीरिक दोष के आधार पर छँटनी: कभी कभी रेवड़ में ऐसे मेमने पैदा होते हैं जिनकी टाँगें छोटी-बड़ी, टेड़ी-मेड़ी, सामान्य से काफी कम जन्म भार व वृद्धि, बोनापन या अन्य कोई कभी हो तो ऐसे मेमनों को तीन माह की उम्र पर बेच देना चाहिये क्योंकि इनको रेवड़ में रखने पर सामान्य उत्पादन प्राप्त नहीं होगा तथा इनसे वयस्क अवस्था में क्रय से भी लाभ प्राप्त नहीं होगा।

प्रजनन क्षमता के आधार पर छँटनी: रेवड़ में कुछ नर व मादा वयस्क ऐसे होते हैं जो देखने मे काफी स्वस्थ्य होते हैं परन्तु उनमें प्रजनन क्षमता की कमी पायी जाती है। कुछ मादा भेड़-बकरी ऐसी होती हैं जो नियमित रूप से गर्मी में नहीं आती हैं और उन्हें बिना गर्भ धारण के ही रेवड़ में रखना पड़ता है। इसी प्रकार कभी कभी प्रजनक मेढ़ा/बकरा भी ऐसा होता है जिसमें गुणवत्ता वाला वीर्य उत्पादन क्षमता नहीं होती है और ऐसे मेढ़े/बकरे से भेड़/बकरी को गाभिन कराने से गर्भ धारण नहीं होता। अतः इस प्रकार प्रजनक मेढ़ा/बकरे को प्रयोग में लेने से पूर्व उसका वीर्य परीक्षण कराना आवश्यक हैं ।

बीमारी के आधार पर छँटनी: यदि रेवड़ में ऐसी भेड़/बकरी है जिसमें छूत की बीमारी है तथा उपचार से भी उसकी बीमारी दूर नहीं होती तो उसे निष्काषित कर देना चाहिये। वर्ष में एक बार प्रजनक मेढ़े/बकरे के चयन से पहले कुछ संक्रामक रोगों जैसे ब्रूसलोसिस का परीक्षण अवश्य कराना चाहिए तथा संक्रमित पशु का प्रयोग प्रजनन के लिए नहीं करना चाहिये। प्रतिरोधक यूरोलिथिएसिस (पथरी) प्रजननक मेढ़ों/ बकरों की प्रजनन क्षमता को घटा देता है अतः ऐसे नरों का चयन प्रजनन के लिए कदापि न करें। ऐसी भेड़/बकरी जिनमें उपचार के बाद भी बार – बार गर्भपात होता है उन्हें भी रेवड़ से निष्काषित कर देना चाहिये।

आयु के आधार पर छँटनी: सामान्यतः भेड़-बकरी की औसत आयु 10 वर्ष मानी गयी है लेकिन इन दोनों ही पशु प्रजाति के जानवरों में 7 वर्ष तक उत्पादन एवं जनन उचित एवं नियमित मिलते हैं और 7 वर्ष पूर्ण होने पर दुग्ध उत्पादन, ऊन उत्पादन, प्रजनन क्षमता आदि में गिरावट आ जाती है तथा बीमार होने की सम्भावना बढ़ जाती है। वृद्ध भेड़ या बकरी से प्राप्त मेमने भी कम शारीरिक भार वाले एवं कम रोग प्रतिरोधक क्षमता वाले पैदा होते हैं जिससे उनमें मृत्युदर बढ़ जाती है। अतः रेवड़ से वृद्ध भेड़/बकरी की तुरंत छँटनी कर मॉस के लिए बेच देना चाहिये।

बरसात में भेड़- बकरियों का स्वास्थ्य प्रबंधन

नितिका शर्मा, गोपाल दास, अनु राहल एवं एम. के. सिंह

बरसात में भेड़ बकरियों का विशेष ध्यान रखना चाहिए क्योंकि इस मौसम की प्रतिकूल परिस्थितियों में भेड़ बकरियों का उचित प्रबन्धन अत्यन्त आवश्यक होता है । अगर बरसात में पशुओं का प्रबधंन ठीक से न किया जाऐ तो बहुत सारे रोग इन्हे घेर लेते हैं । बरसात में भेड़ बकरियों में होने वाले प्रमुख रोग हैं- आँत्र विषाक्तता/फड़किया (ई0टी0), अन्त: परजीवी (पेट के कीड़े) संक्रमण, बाह्य परजीवी (जूँ, किलनी, पिस्सू की समस्या) संक्रमण, न्यूमोनिया, आँख के रोग व संक्रमण इत्यादि। इन रोगों से बचाव के उपाय इस प्रकार हैं।

आँत्रविषाक्तता: इसे फड़किया रोग या इन्ट्रोटाक्सीमिया भी कहते हैं जो बरसात में भेड़ बकरियों को ग्रसित करने वाला एक प्रमुख रोग है । यह रोग खान-पान में आकस्मिक बदलाव व तनाव के कारण होता है । इस रोग के लक्षण पेट में तेज दर्द, छटपटाहट, पॉव जमीन पर पटकना आदि हैं। कभी-कभी रोग की सघनता होने पर उपचार का समय ही नहीं मिल पाता है और पशु रोग के लक्षण दिखाए बिना ही मर जाती है । इस रोग का एन्टीबायोटिक दवाओं से उपचार किया जाता है। इस रोग से बचाव के लिये 3 महीने की आयु पर मेमनों को ई0टी0 का टीका लगवाना चाहिए तथा पंद्रह दिन बाद इसका बूस्टर लगवाना चाहिऐ तत्पश्चात यह टीका प्रतिवर्ष लगवाना चाहिये। रोग की बहुलता को देखते हुये यह टीका वर्ष में दो बार लगवाना चाहिऐ। इस रोग से बचाव के लिए आवश्यक है कि खान-पान में कोई बदलाव अचानक न करें तथा कोई भी बदलाव धीरे-धीरे लायें ।

बाह्य परजीवी: बरसात में भेड़ बकरियों को जल्दी-जल्दी नहलाया नहीं जा सकता, उस पर ये एक दूसरे के निकट रहने की कोशिश करती हैं जिससे इनमें किलनी, जूँ, पिस्सू जैसे परजीवियों का संक्रमण बढ़ जाता है। किलनी, जूँ व पिस्सू पशु की खाल पर रहने वाले ऐसे परजीवी हैं जो पशु का खूने चूसते हैं जिससे भेड़ों और बकरियों में खून की कमी हो जाती है और उनकी खाल को क्षति पहुँचती है। इन परजीवियों से बचाव के लिए परजीवी नाशक दवाओं जैसे साइपरमेथरिन, डेल्टामेथरीन से भेड़ बकरियों को नहलाना चहिये। नहलाने के लिए जरूरी है कि 2-3 मि0ली0 परजीवी नाशक दवा का पानी में घोल बना लें । अधिक बरसात के समय भेड़ बकरियों को नहलाना नहीं चाहिए क्योंकि इससे निमोनिया होने का डर रहता है। ऐसी स्थिति में बकरी व भेड़ पालक आइवरमेक्टिन नामक दवा का प्रयोग कर सकते हैं। आइवरमेक्टिन दवा का इन्जेक्शन 1 मि0ली0 प्रति 50 किलो शारीरिक भार के अनुसार खाल के नीचे लगाना चाहिये।

अन्त: परजीवी: बरसात में खाल पर रहने वाले परजीवियों के साथ-साथ शरीर के अन्दर रहने वाले परजीवी या अन्त: परजीवियों की संख्या भी बढ़ जाती है। यह परजीवी या कृमि मुख्यत: पेट व आँतों में रहते हैं जो भेड़ बकरयों का खून पीते हैं जिससे पशु में खून की कमी हो जाती है, पशु खाना-पीना छोड़ देता है, भूख भी कम लगती है । जानवरों को दस्त भी हो जाते हैं तथा जबड़ों के नीचे सूजन भी आ जाती है । इसमें उचित खान पान के बावजूद भेड़ बकरियाँ कमजोर हो जाती हैं और कभी कभी मर भी जाती हैं ।

जानवरों को अन्त: परजीवियों से बचाव हेतु कृमिनाशक दवायें जैसे फेनबेन्डाजोल, एल्वेन्डाजोल, क्लोसेंटल, ट्रिक्लाबेन्डाजोल का प्रयोग पशु चिकित्सक की सलाह से करें । इन परजीवियों से बचाव के लिए बाड़ों की मिट्टी को समय-समय पर बदलना चाहिये । बाड़ों में नमी व आर्द्रता न बनने दें तथा बाड़ों से प्रति वर्ष कम से कम दो बार मेंगनी हटवायें । एक ही चारागाह का प्रयोग लम्बे समय तक भेड़ व बकरियों को चराने के लिए न करें । बाड़ों को धूप लगने दें तथा धूप से सुखा लें । बाड़ों के आस-पास घोंघों के प्रकोप को कम करने के लिए बत्तक पालें । बत्तक घोंघों को खा जाती है। घोंघों को मारने के लिए नीलाथोथे (कॉपर सल्फेट) का प्रयोग करें । परंतु नीलाथोथा जहरीला होता है अत: इसका प्रयोग पशु चिकित्सक की सलाह से सावधानी पूर्वक करें । तालाब व रूके हुये पानी के आस-पास पशुओं को चरने न दें तथा पीने के लिए साफ पानी उपलब्ध करायें। बाड़ों में सफाई रखें तथा समय-समय पर बिना बुझे चूने का छिड़काव करें ।

न्यूमोनिया: न्यूमोनिया रोग बरसात में भेड़ बकरियों को होने वाला एक महत्वपूर्ण रोग है । इस रोग का समय से उपचार न होने पर पशु की मृत्यु हो जाती है । मौसम में अचानक बदलाव, बाड़े में भीड़, स्थान परिवर्तन, फफूँदी लगा दाना तथा बारिस में भीगने से इस रोग के होने की संभावना बढ़ जाती है । इस रोग के लक्षण हैं तेज बुखार, खाँसी, साँस लेने में परेशानी, आँख नाक से पानी बहना, भूख न लगना इत्यादि। इस रोग के उपचार के लिए पशु चिकित्सक के निर्देशानुसार एन्टीबायोटिक दवा देना चाहिऐ । न्यूमोनिया से बचाव के लिऐ जरूरी है कि भेड़ बकरियों को साफ सुथरे हवादार रोशनी दार बाड़े में रखा जाए। इसके अतिरिक्त भेड़ व बकरियों को बारिश में भीगने न दें । बारिश के समय उन्हें बाड़े में ही खिलाऐं पिलाऐं । रोगी पशु को अन्य पशुओं से अलग कर उसका इलाज करायें ।

आँख के रोग बरसात में कभी कभी आँख के रोग भी पशु को घेर लेते हैं जिसके लक्षण हैं पशुओं की आँख से आँसू निकलना, आँख में सूजन, आँख का लाल होना, पुतली सफेद होना व अंधापन इत्यादि हैं । इस स्थिति में आँख साफ करके आँख में एन्टीबायोटिक युक्त ड्राप्स दिन में 2-3 बार 3-4 दिन तक डालना चाहिये । विटामिन ए का इन्जेक्शन पशु को लगवाएं।

त्वचा के रोग बरसात में भेड़ बकरियों में फोड़े हो जाते हैं और पस पड़ जाता है । इस स्थिति में फोड़े पकने पर पस निकाल कर घाव को लाल दवा के घोल से धोकर पोवीडोन आयोडीन जैसे एन्टीसेप्टिक मलहम लगायें । पस व मवाद को बाड़े से दूर मिट्टी में दबा दें उसे अन्य पशुओं के सम्पर्क में न आने दें नहीं तो संक्रमण फैलने का डर रहता है । यदि घाव में कीड़े पड़ जाएँ तो तारपीन का तेल लगाकर कुछ समय छोड़ दें तथा जब लारवा ऊपर आए तो चिमटी से निकाल दें तत्पश्चात एन्टीसेप्टिक मलहम लगाऐं।

इस प्रकार किसान बरसात में होने वाले रोगों से भेड़ बकरियों का बचाव कर सकते हैं ।

बकरियों में विषाक्तता में नमूनों का एकत्रण

अनु राहल एवं नितिका शर्मा

बकरियों में विषाक्तता प्रायः आकस्मिक होती है तथा सम्पूर्ण देश में खिलाये-पिलाये जाने वाले विषाक्त तत्वों अथवा पदार्थों द्वारा उत्पन्न होती है। ऐसे अनेक पौधे, फल, अनाज, खनिज दवाइयाँ आदि है जिनमें या तो स्वयं विष होता है या पर्यावरण प्रदूषण के द्वारा विष पानी, मिट्टी से अवशोषित होकर चारे में उपलब्ध होता है। सामान्यतः चारे की दुलर्भता के मौसम में विषयुक्त पौधों को अधिक मात्रा में खा लेने से बकरी की आकस्मिक मृत्यु हो जाती है। ऐसी स्थिति में यदि कोई बकरी आ जाती है तो उसका परीक्षण करना अत्यन्त आवश्यक है ताकि यह पता लगाया जा सके कि उक्त बकरी की मृत्यु किन विषाक्त तत्वों के द्वारा हुई है ।

यह पता लगाने के लिए मृत बकरी के विभिन्न मुख्य शारीरिक अंगों के ऊतकों के नमूने, आसपास उपस्थित सामानों एवं चारे का नमूना लेना आवश्यक हो जाता है। यदि बकरी जीवित अवस्था में है तो उल्टी का नमूना, रक्त का नमूना (20-30 मि0ली0, 4 सेंटीग्रेट तापमान पर), मूत्र का नमूना (दवाओं का उपयोग न करें)। यदि आवश्यक हो तो नाखून, बाल एवं त्वचा के नमूने (20-30 ग्रा0) भी लें।

यदि बकरी मृत है अथवा चिकित्सा के दौरान उसकी मृत्यु हो जाती है तो मुख्यतः यकृत/जिगर/लीवर (100-250 ग्रा0), पेट अथवा रूमेन में उपस्थित अधपचा भोजन (0.5-1 किग्रा), गुर्दा (सामान्यतः पूरा), वसा (गुर्दे के ऊपर उपस्थित, 100 ग्रा0) तथा रक्त (हृदय में उपस्थित खून के थक्के) लेना चाहिए ।

यदि छोटी बकरी है तो पूरा का पूरा शव ही प्रयोगशाला में निरीक्षण के लिए भेज देना चाहिए ।

प्रयोगशाला परीक्षण के लिए नमूनों की पैकिंग मजबूत प्लास्टिक बैग या बोतलों में करनी चाहिए । प्रत्येक नमूने को अलग-अलग बांधना चाहिए। नमूनों में किसी भी प्रकार के एन्टीसेप्टिक, प्रिजरवेटिव अथवा फिक्सेटिव का इस्तेमाल नहीं करें। नमूनों को रूई, ऊन अथवा अन्य सोखने वाली वस्तुओं के साथ नहीं बांधें। थैले/ बैग/ बोतल को ठीक प्रकार से सील बन्द करें। थैले/बैग/बोतल के बाहर नमूनों की उचित जानकारी लिख देनी चाहिए। शीशे के बर्तनों या दवा की खाली बोतलों का उपयोग न करें। बर्तनों को पूरा न भरें कुछ खाली जगह छोड़ दें ताकि नमूनों में सड़न पैदा न हो।

प्रेषण के प्रारूप में सभी अभिलेख विधिवत भरा जाना चाहिए । जैसे- बकरी मालिक का नाम व पता, बकरी की पूरी जानकारी (नस्ल, उम्र, लिंग), संक्रमित बकरीओं की संख्या, नमूने का प्रकार, लक्षण के आने की तिथि एवं मृत्यु तिथि, लक्षणों का पूर्ण विवरण तथा अन्य जानकारी यदि महत्वपूर्ण हों ।

यदि नमूना चारे का हो तो सूखा चारा (1 किग्रा), ताजा चारा (घास आदि) 2 किग्रा (कागज में लपेटना चाहिए), संरक्षित चारा (2 किग्रा) (मजबूत प्लास्टिक बैग में आधा भरा हुआ तथा पूरा पानी एवं हवा निचोड़ कर पैक करें) एवं भूसा (0.5 किग्रा) भेज देना चाहिए । यदि पौधा छोटी प्रजाति का हो तो पूरा पौधा तथा बड़े पौधों में पत्तियों, टहनियों एवं फूल सहित भेज देना चाहिए । जड़ों एवं फलों को लकड़ी के बर्तन में बाँधें ।

प्रेषण प्रारूप में चारे के एकत्रित करने की जगह एवं तिथि का विवरण दें, नमूने की स्थिति क्या है, किस प्रकार के लक्षण एवं घाव पाये गए, किस कीटनाशक का चारे पर उपयोग किया गया यह सभी लिखा होना आवश्यक है।

यदि कवक संक्रमित चारे को प्रयोगशाला परीक्षण के लिए प्रेषित करना है तो चारा (0.5 किग्रा) भेजना चाहिए । नमूना चारे के गोदाम में अलग-अलग जगहों जैसे कि ढेर के चारों कोनों, बीच, अन्दर से, गीले चारे आदि का एकत्र करें।

यदि पानी का नमूना एकत्र करना है तो बहते हुए पानी से- जहां पर मृत्यु हुई है वहां से 50 मीटर ऊपर की दिशा से पानी एकत्र करें। इसके अलावा मृत्यु के स्थान से एवं गंदा पानी जहां से उस बहते पानी में आ रहा है वहाँ से और जिस स्थान पर मृत्यु हुई है वहाँ से 50 मीटर नीचे की दिशा से पानी एकत्र करें।

रूके हुए पानी से जहाँ पर बकरी की मृत्यु हुई है, अथवा संदेह के आधार पर या उस जगह से जहाँ गंदा पानी/कूड़ा डाला गया है, पानी का नमूना (2 लीटर), प्लास्टिक के बर्तन में एकत्र करें ।

जहाँ कहीं सूक्ष्म जीवों से संबंधित परीक्षण कराना हो उस स्थिति में जीवाणु रहित बर्तनों का प्रयोग करें।

विषाक्त पदार्थों का प्रेषण कभी भी डाक द्वारा न करें ।

बकरियों में काक्सीडिओसिस (कुकड़िया रोग)

रूपेश, दिनेश कुमार शर्मा, नितिका शर्मा, के. गुरूराज एवं सौविक पाल

बकरियों में कुकड़िया रोग आइमेरिया प्रजाति (एपिकॉम्प्लेसा वर्ग) के आदिजन्तु परजीवी से होता है। आयु अनुसार 2–6 माह तक के बढ़ते हुए मेमने मुख्य रूप से इस रोग से प्रभावित होते हैं। साधारणत: दूध छोड़ने वाले मेमनो में इस रोग के होने की सम्भावना अधिक होती है। कुकड़िया रोग का संक्रमण उत्सर्जित रोगी पशु द्वारा त्याग किये मल/मेंगनी में उपस्थित परजीवी के उसिस्ट (पुटिकाऐं) को स्वस्थ पशु द्वारा ग्रहण कर लेने से फैलता है। रोगी पशु के मल से दूषित आहार एवं पानी रोग को फैलाने में सहायक होता है। आवास में सफाई की कमी, दूषित आहार व पानी, बाड़े में अधिक पशु रखना, अपर्याप्त आहार, वयस्क एवं मेमनों को साथ–साथ रखना इस रोग के मूल कारण हैं।

रोगजनन – दूषित आहार व पानी के साथ परजीवी की उसिस्ट आंत में पहुँचकर वृद्धि करती हैं। परजीवी की साइजोंट व गैमिटोसाइट अवस्था रोगकारक होती है। जो परिपक्व होने पर आँत की भित्ति की उपकला (एपिथीलीयम) को नष्ट करती हुई हानि पहुँचाती हैं। परजीवी के विकास के कारण जो संरचनात्मक व क्रियात्मक परिवर्तन होते हैं उससे दस्त, रक्तस्त्राव व पेचिस होती है एवं शरीर भार में कमी हो जाती है । कभी–कभी तंत्रिकीय लक्षण भी देखे जा सकते हैं जिसका सही कारण ज्ञात नहीं है।

लक्षण–

1. पशु में पानी जैसे पतले बदबूदार दस्त जो श्लेष्मा व रक्तयुक्त हो सकते हैं।
2. रक्तस्त्राव की मात्रा के अनुसार ही रोगी बकरियों में एनीमिया (रक्त की कमी) हो सकती है।
3. पूँछ पर दस्त या रक्तयुक्त दस्त के लक्षण देखे जा सकते हैं।
4. शरीर में तरल की कमी (निर्जलीकरण) का पाया जाना।
5. श्लेष्मा झिल्लियों का पीला या सफेद पड़ जाना।
6. बकरियों का खड़ा न हो पाना।
7. भूख में कमी।
8. सुस्ती एवं तनाव।
9. रोगी मेमनों में शरीर भार में कमी।
10. कमजोरी का पाया जाना।
11. पेट दर्द का पाया जाना।
12. लेट जाना।
13. तंत्रिकीय लक्षण जैसे– सिर को नीचे या उपर की तरफ मोड़ लेना, चक्कर आना मांसपेशियों में कम्पन।
14. मृत्यु भी हो सकती है

उपचार

1. सल्फाडायमिडीन– 75–100 मि0ग्रा0 प्रति किग्रा शारीरिक भार के अनुसार 5–7 दिन तक की खुराक
2. ऐम्प्रोलियम– 50 मि0ग्रा0 प्रति किग्रा शारीरिक भार के अनुसार 5–7 दिन की खुराक
3. टोल्ट्राजुरिल– 20 मि0ग्रा0 प्रति किग्रा शारीरिक भार के अनुसार एक दिन की खुराक

बचाव

मोनेन्सिन– 20 ग्रा0 प्रति 100 किग्रा दाने में मिलाकर खिलाना चाहिए

लासालोसिड– 25–100 मि0ग्रा0 प्रति किग्रा दाने में मिलाकर खिलाना चाहिए ।

रोकथाम

1. रोग के नियंत्रण के लिए रोगी बकरियों को स्वस्थ बकरियों से अलग रखना चाहिए।
2. बाड़े में साफ–सफाई एवं मल के उचित निष्कासन हेतु अच्छी व्यवस्था होनी चाहिए।
3. बाड़ों में नमी नहीं रहनी चाहिए तथा नमी को कम करने के लिए चूना पाउडर का छिड़काव करना चाहिए जिससे उसिस्ट नष्ट हो जाती हैं।
4. बकरियों का चारा दाना उनके मल मूत्र से संक्रमित न हो , ऐसी व्यवरूथा करनी चाहिए।
5. चारा –दाने एवं पानी के बर्तनों की नियमित सफाई करनी चाहिये।
6. मलमूत्र के संक्रमण से बचाव हेतु विशेष प्रकार के बने पात्रों में चारा देना चाहिए।
7. मेमनों को वयस्क बकरियों से अलग रखकर चराना व खिलाना चाहिए।
8. नियमित खिलाये जाने वाले चारे में एक दम से अचानक ज्यादा बदलाव नहीं करना चाहिए।
9. चारे व दाने में परिवर्तन धीरे–धीरे करना चाहिए। जिन क्षेत्रों में कुकडिया रोग कि अधिक समस्या रहती है वहाँ समय–समय पर बकरियों के खाने में दवाओं का प्रयोग करना चाहिए ।
10. चारा दाना देने वाले व्यक्ति के हाथ हमेशा साफ होने चाहिए।

प्रसार एवं किसान शिक्षा कार्यक्रम / प्रशिक्षण / कार्यशाला / संगोष्ठी

राष्ट्रीय प्रशिक्षण

- दिनांक 28 जनवरी से 6 फरवरी 2016 तक 65 वें दस दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक बकरी पालन प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमें सार्क देशों में नेपाल सहित भारत के 12 राज्यों से 81 सहभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

- दिनांक 21 से 30 अप्रैल 2016 में 66 वें दस दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक बकरी पालन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें देश के 15 राज्यों से 53 सहभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

प्रायोजित प्रशिक्षण

- दिनांक 8–10 मार्च 2016 में मुख्य जिला पशु चिकित्सा अधिकारी बेलनगीर उड़ीसा द्वारा प्रायोजित 3 दिवसीय प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया । उड़ीसा राज्य के बेलनगीर जिला के दस किसानों ने इसमें प्रशिक्षण प्राप्त किया ।
- दिनांक 14–18 जून 2016 में पशु पालन विभाग, उ.प्र. द्वारा प्रायोजित पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें उत्तर प्रदेश के 14 सहभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया ।

प्रदर्शनी/किसान मेला

- दिनांक 19–21 मार्च 2016 कृषि 'उन्नति मेला', आई सी ए आर–आई ए आर आई पूसा नई दिल्ली में जमुनापारी, बरबरी व जखराना प्रजाति के नर–मादा जानवरों सहित बकरी पालन की तकनीकियों का स्टाल लगा कर प्रदर्शन कर सहभागिता की गयी।

- दिनांक 28 मार्च 2016 राष्ट्रीय भेड़ एवं किसान मेला आई.सी.ए.आर–सी.एस.डब्लू.आर.आई अविकानगर राजस्थान में संस्थान की स्टाल लगा कर बकरी पालन तकनीकियों का प्रदर्शन किया गया।
- दिनांक 16 अप्रैल 2016 में आई.वी.आर.आई, इज्जतनगर बरेली में आयोजित प्रधान मंत्री फसल बीमा योजनान्तर्गत 'किसान सम्मेलन' में बकरी पालन तकनीकियों का प्रदर्शन कर सहभागिता की गयी ।

- दिनांक 30 अप्रैल 2016 में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजनान्तर्गत, कृषि विज्ञान केन्द्र एवं उ.प्र. पं. दीन दयाल उपाध्याय पशु चिकित्सा महाविद्यालय एवं गौ अनुसंधान संस्थान, मथुरा द्वारा आयोजित किसान जागृति सम्मेलन एवं कृषि प्रदर्शनी में संस्थान का स्टाल लगा कर बकरी पालन की तकनीकियों का प्रदर्शन कर सहभागिता की गयी।

सभा / आयोजन

• गणतन्त्र दिवस का आयोजन

संस्थान मे 26 जनवरी, 2016 को 67 वें गणतन्त्र दिवस का आयोजन किया गया। संस्थान के प्रभारी निदेशक डा. एस. के. जिन्दल द्वारा ध्वजारोहण किया गया तथा संस्थान कर्मियों को उद्‌बोधन किया। इस अवसर पर निदेशक महोदय ने बकरियों के विकास हेतु तथा आजीविका में इनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए संकल्प सहित कार्य करने के लिए आह्वान किया।

• राष्ट्रीय समरसता दिवस

डा. बी. आर. अम्बेडकर की 125 वीं वर्षगाँठ को संस्थान में समरसता दिवस के रूप में दिनांक 14 अप्रैल, 2016 को मनाया गया। संस्थान के निदेशक डा. एम. एस. चौहान के द्वारा दीप प्रज्जवलित करके कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। डा. चौहान ने डा. अम्बेडकर द्वारा किये गए महत्वपूर्ण योगदान की चर्चा की तथा भारतीय संविधान के निर्माण में उनके महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला।

• आई. सी. ए. आर–ए. आई. सी. आर. पी की 16वीं बैठक

ए. आई. सी. आर. पी. (बकरी सुधार) की 16 वीं बैठक का आयोजन संस्थान एवं केरल पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, मानूती (केरल) द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस बैठक का शुभारम्भ डा. आर. एस. गाँधी, ए.डी.जी. (एपी एण्ड बी) द्वारा किया गया। बैठक में विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डा. जोसफ मैथ्यू, डा. के. देवदास, निदेशक (एकेडेमिक एण्ड रिसर्च), डा. एम. एस. चौहान, निदेशक आई. सी. ए. आर.–सी. आई. आर. जी. ने मुख्य भूमिका निभाई। इस अवसर पर डा. आर. एस. गाँधी ने विरल होती हुई बकरी की प्रजातियों के संरक्षण हेतु इनसिटू संरक्षण पर बल दिया। डा. एम. एस. चौहान, निदेशक द्वारा बकरियों की अन्य नस्लों पर भी शोध करने की आवश्यकता बताई। डा. पी. के. राउत प्रभारी पी0 सी0 द्वारा ए. आई. सी. आर. पी के अन्तर्गत संचालित परियोजना की प्रगति रिपोर्ट पेश की गई।

• स्वच्छता पखवाड़े का आयोजन (16.05.2016 से 31.05.2016)

स्वच्छता भारत मिशन के तत्वाधान में संस्थान द्वारा स्वच्छता पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस पखवाड़े का शुभारम्भ माननीय निदेशक द्वारा किया गया। संस्थान परिसर मे विशेष स्वच्छता अभियान चलाया गया जिसमें संस्थान कर्मियों ने भी अपना सार्थक योगदान दिया।

• आई. सी. ए. आर–सी. आई. आर. जी में योग दिवस

संस्थान के स्टाफ वेल्फेयर क्लब द्वारा संस्थान ने दिनांक 21.06.2016 को स्पोर्ट कम्पलैक्स में अन्तराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डा. एम. एस. चौहान तथा संस्थान कर्मियों ने सहभागिता की। योग दिवस कार्यक्रम 10 दिन तक चला जिसमें 25–30 संस्थान के कर्मियों ने प्रतिदिन भाग लिया। संस्थान के निदेशक डा. चौहान द्वारा संस्थान कर्मियों का आह्वान किया तथा उन्हें योग को नित्यप्रति अपनाने के लिए प्रेरित किया।

सभा / आयोजन

• राजभाषा कार्यशाला

संस्थान के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा संस्थान में दिनांक 29 जून, 2016 को एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। संस्थान के निदेशक द्वारा दिए गए उद्‌बोधन में हिन्दी में कार्य करने हेतु प्रेरित किया गया। हिन्दी कार्यशाला में श्री शैलेन्द्र वशिष्ठ मुख्य वक्ता के रूप में आमन्त्रित किए गए थे। उन्होंने हिन्दी भाषा के महत्व को रेखांकित किया। इस कार्यक्रम में संस्थान कर्मियों की अच्छी सहभागिता रही।

• जागरूकता अभियान

डी. एस. टी–एस. ओ. आर. एफ प्रोग्राम के अन्तर्गत 18 मार्च 2016 को दीनदयाल धाम (नगला चन्द्रभान) फरह, मथुरा में महिलाओं को जागरूक बनाने के लिए एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें आस–पास के गाँवों से करीब 54 महिलाओं ने भाग लिया। इस अवसर पर संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा उन्नत बकरी पालन की तकनीकियों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। महिला कृषकों के लिए संस्थान में दिनांक 22 मार्च, 2016 को कमेटी कक्ष में बकरियों के प्रजनन की उन्नत तकनीकों पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया। दिनांक 23 मार्च, 2016 को 'बकरी पालन में खनिज मिश्रण का महत्व' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।

जागरूकता अभियान

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नाम : **बकरी–भेड़ रोग: चिकित्सा एवं प्रबन्धन**

पुस्तक लेखक : **डा. दिनेश कुमार शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम, फरह, मथुरा**

प्रकाशक : **राजस्थान हिन्दी प्रबन्ध अकादमी, जयपुर**

प्रकाशन वर्ष : **2015**

पृष्ठ संख्या : **228**

मूल्य : **रू. 160/–**

डा. दिनेश कुमार शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम, फरह द्वारा लिखित पुस्तक **बकरी–भेड़ रोग: चिकित्सा एवं प्रबन्धन** बकरी एवं भेड़ रोगों के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है। पुस्तक में कुल 13 अध्याय, 27 चित्र एवं 7 तालिकाओं के रूप में बकरी–भेड़ रोगों की गहन चर्चा की गई है। पुस्तक में भाषा का प्रयोग सरल सुपाच्य और प्रभावी है जो विषय की निरन्तरता को बनाये रखता है। यह पुस्तक पशुपालन के क्षेत्र में किया गया एक सफल प्रयास है। आशा की जाती है कि बकरीपालकों, विद्यार्थियों एवं पशु चिकित्सा अधिकारियों को बकरी–भेड़ रोग सम्बन्धी जानकारी को बढ़ाने में यह पुस्तक महत्वपूर्ण योगदान कर बकरी एवं भेड़ पालन के क्षेत्र में मील का पत्थर सिद्ध होगी।

विशिष्ट अतिथि

माननीय श्री ए. मन्जू

कर्नाटक राज्य के माननीय रेशम एवं पशु पालन मंत्री श्री ए. मन्जू ने दिनांक 12 जनवरी, 2016 को संस्थान में आये। उन्होंने संस्थान में चल रहे शोध कार्यों पर कार्यकारी निदेशक डा. एस. के. जिन्दल से चर्चा की साथ ही संस्थान की शोध प्रयोगशालाओं एवं शोध प्रक्षेत्रों पर भ्रमण किया।

माननीय श्री गिरिराज सिंह

संस्थान में 23 जून, 2016 को माननीय केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री गिरीराज सिंह का आगमन हुआ। माननीय मंत्री जी ने संस्थान का भ्रमण किया तथा संस्थान के वैज्ञानिकों एवं एन. डी. आर. आई, करनाल से आये वैज्ञानिकों के साथ बैठक की। इस अवसर पर पशु पोषण विभाग के प्रभारी डा. यू. बी. चौधरी ने सहजन मिश्रित बकरियों के आहार पर व्याख्यान दिया।

सम्मान, पुरस्कार एवं विशिष्ट उपलब्धि

- दीन दयाल धाम, फरह मथुरा मे आयोजित कृषि प्रदर्शनी (9–11 अक्टूबर, 2015) में संस्थान को बकरी आधारित तकनीकियों के प्रदर्शन हेतु तीसरा पुरस्कार प्राप्त हुआ।

- संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डा. राजवीर सिंह पवैया को पैथोलोजी सोसाईटी द्वारा '**बेस्ट एक्जीक्यूटिव कमेटी मेम्बर**' सम्मान से नवाजा गया।

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान

(ISO 9001:2008 प्रमाणित संस्थान)

मखदूम, फरह 281 122, मथुरा (उ.प्र.) भारत

दूरभाष न.: 0565–2763380, फैक्स न.: 0565–2763246

ई–मेल: director@cirg.res.in,

बेबसाइट: http:// cirg.res.in

हेल्पलाइन न.: 0565–2763320

यमुना सिंडिकेट, मथुरा, ई–मेल : ys9456684421@gmail.com द्वारा मुद्रित